भारतीय साहित्य और अनुवाद

संपादक
डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
डॉ. राम दगडू खलंग्रे

भारतीय साहित्य और अनुवाद

14. भाषा, साहित्य और अनुवाद 79
डॉ. रश्मि पाण्डेय
15. अनुवाद की उपयोगिता 84
डॉ. पंडित बन्ने
16. अनुवाद का स्वरूप एवं उपादेयता 88
प्रा. रूपचंद मारूती खराडे
17. अनुवाद के विधाओं का संदर्भ 92
अर्चना महादेवराय निघोंट
18. आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद की समस्या 101
डॉ. राखी उपाध्याय
19. अनुवाद का महत्व 108
डॉ. विरनाथ पांडुरंग हुमनाबादे
20. अनुवाद साहित्य की आवश्यकता 111
डॉ. गणपत श्रीपतराव माने
21. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार और महत्व 116
डॉ. राम दगडू खलंग्रे
22. मशीनी अनुवाद तथा हिंदी 122
डॉ. हणमंत पवार
23. अनुवाद और संचार माध्यम 128
प्रा. एच. टी. पोटकुले
24. हिंदी अनुवाद में रोजगार के विविध आयाम 131
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
25. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की प्रासंगिकता 136
डॉ. निशा वालिया
26. हिंदी भाषा विभिन्न रोजगारों की उपलब्धि 142
डॉ. मालती शिंदे (चव्हाण)
27. अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ 145
डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
28. अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ 152
सौ. योगिता अविनाश चौकटे

23
अनुवाद और संचार माध्यम

प्रा. एच. टी. पोटकुले
कला व विज्ञान महाविद्यालय,
शिवाजीनगर, गढी, ता. गेवराई
जि. बीड (महाराष्ट्र)

अनुवाद एक ऐसा शिल्प है जिसमें एक भाषा का संदेश दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रक्रिया कौशल है। अनुवाद एक ऐसी कला है जो एक प्रदेश,राज्य, देश के ज्ञान–विज्ञान को दूसरे देशों तक पहुँचाती हैं जिससे दूसरो को उसका लाभ मिलता है। प्रौद्योगिकी क्रांति के कारण पूरी दुनिया एक छोटे गाँव के रूप में बदल रही है। संस्कृति, साहित्य, परिवेश, अनुसंधान, व्यापार, पर्यटन, चिकित्सा, उद्योग, ज्ञान–विज्ञान आदि में नित्य परिवर्तन हो रहा है और इस परिवर्तन में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्राचीन काल से संस्कृति और सभ्यता के बीच सेतु का काम करती है। संचार माध्यमों में अनुवाद का स्वरूप और आवश्यकता साहित्यिक अनुवाद से अलग और व्यापक है। भारत में अनुवाद की परम्परा प्राचीन होते हुए भी अनुवाद का सैध्दान्तिक विकास आधुनिक है।

न्यायसूत्र

''विधि विहितस्यातु वचनमनुवादः'' अर्थात विधि तथा विहित का पुनः कथन अनुवाद है। डॉ. भोलेनाथ तिवारी–''एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।''[1]

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी

विचारों,जानकारी वगैरह का विनिमय किसी और तक पहुँचाना या बांटना, चाहे वह लिखित, मौखिक या सांकेतिक हो,संचार है। जार्ज ए.–'जनसंचार' का अर्थ है जनसंचार माध्यमों–जैसे रेडियो, दूरदर्शन, प्रेस और चलचित्र द्वारा सूचना और मनोरंजन का प्रचार–प्रसार करना।''[2] जब दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में कुछ सार्थक चिन्हों,संकेतों या प्रतिकों के माध्यम से विचारों या भावनाओं का आदान–प्रदान करते है तो उसे संचार कहते है। रोजमर्रा के कामकाज से लेकर वैज्ञानिक–तकनीकी अध्ययन में अनुवाद का महत्व एवं आवश्यकता अधिक है ज्ञानविज्ञान के इस काल में जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की प्रासंगिकता स्पष्ट है। विश्व का ज्ञान–विज्ञान क्षेत्र

में क्षेत्रीयवाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकलकर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केंद्रबिंदू तक पहुँचने का एकमात्र सेतु है अनुवाद। आधुनिक युग में संचार साधन या माध्यमों के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज की 21 वी सदी के संचार के साधन है। इलेक्ट्रोनिक माध्यम–रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, टेपरिकार्डर, इंटरनेट, ई–मेल, कम्प्यूटर, लैंडलाईन, मोबाईल फोन, टेलीग्राम, पेजर, फैक्स, विडियोकॉलींग, विडियो कॉन्फ्रेसिंग, मुद्रण माध्यम–समाचार पत्र (अखबार), पत्रिकाएँ, पुस्तकें, जर्नल पैम्पलेट–आदि संचार के लोकप्रिय साधन है।

अनुवाद के क्षेत्र में संचार माध्यमों की महत्वपुर्ण भूमिका है। आज विभिन्न देशों के राष्ट्रप्रभूत्वों के विचार या भाषण अनुवाद के कारण विश्व के कोने–कोने तक पहुँच रहे है। संचार माध्यमों के अनुवाद करना अपने आप में एक चुनौती है। अनुवाद करते समय विषय के अनुसार भाषा प्रयोग होना अनिवार्य है। जैसे की ग्रामीणों, देहाती कार्यक्रमों में स्थानीय बोली के शब्द, बोलचाल की भाषा का होना आवश्यक है। विषय सांस्कृतिक, साहित्यिक, औद्योगिक, चिकित्सा, महिला, बच्चे, युवा कार्यक्रमों में भाषा और शैली अलग-अलग होनी चाहिए। रेडियो के लिए अनुवाद करते समय सरल सटीक शब्दों का प्रयोग वाक्य छोटे हो इसका ध्यान रखना होता है। क्योंकि रेडियों का समाचार पुनः सुनना संभव नहीं होता।

आधुनिक समय में टेलीविजन सबसे लोकप्रिय संचार माध्यम है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक टेलीविजन लोकप्रिय है और अधिक देखा जानेवाला माध्यम है। टेलीविजन पर संस्कृति, अध्यात्म, संगीत, मनोरंजन, कार्टून, विश्वविद्यालय, स्कूल आदि सभी क्षेत्रों की जानकारी हमें मिलती है। टेलीविजन में भाषा के साथ चित्र बोलते है और रंग, प्रकाश और ध्वनि का संयोजन भी होता है। इसिलिए अनुवाद करते समय भाषा की भूमिका सीमित, संक्षिप्त एवं सटीक शब्दों का प्रयोग आवश्यक है। अनुवादक को लक्ष्य भाषा की सभी प्रयुक्तियों का ज्ञान होना जरूरी है।

फिल्म केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि उनमें से संदेश भी मिलता है और यह केवल अनुवाद के माध्यम से संभव हो सका है। फिल्म में अनुवाद की भूमिका दो प्रकार की होती है–डबिंग और सब टाइटलिंग। आजकल हम डबिंग फिल्म या धारावाहिक देख रहे है वह अनुवाद के कारण संभव हुआ है। आज हम पूरी तरह से कम्प्यूटर पर आश्रित हो गये है। कम्प्यूटर के अविष्कार के कारण संचार, सूचना के आदान-प्रदान में काफी बदलाव आया है। आज हम इंटरनेट के माध्यम से अपने विचारों, ज्ञान को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचा सकते है। ई–मेल के माध्यम से पलक झपकते ही संदेश भेजा जाता है।

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व व्यापक हो गया है। विश्व के विविध भाषाओं के अनुवाद के माध्यम से ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता हो रही है। आज पत्रकारिता के क्षेत्र में समाचार एजेंसियों,संवाददाताओं और प्रेस

विज्ञप्तियों द्वारा प्राप्त समाचारों को क्षण–क्षण में अनुदित करना होता है। इसिलिए अनुवादक को लक्ष भाषा की सभी प्रयुक्त्यों का ज्ञान होना आवश्यक है। समाचारों में लक्ष्य भाषा की लोकोक्तियाँ, मुहावरों का प्रयोग देखने को मिलता है जैसे–चेहरा लाल पिला हो गया। राजनीति, विज्ञान, चिकित्सा, वाणिज्य समाचारों में अनुवाद का अधिक दृष्टिपात होता है। जनसंचार माध्यम का महत्वपूर्ण माध्यम है–पत्रिकाएँ। वाणिज्य व्यापार, औद्योगिक संस्थाओं में बाजार समाचार को महत्व प्राप्त है वह पत्रिकाओं के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया जाता है।

नयी प्रौद्योगिक को जनमानस तक पहुँचाने के लिए हिंदी भाषा अब कार्पोरेट जगत की हथियार बन गई है। तकनीकी युग में अग्रेंजी के बाद हिंदी ने अपना स्थान बना लिया है। वैश्वीकरण के दौर में पाश्चात्य देशों में भी हिंदी सिखाई जा रही है। विदेशी कंपनियाँ भारत में अपनी कंपनी का विस्तार करने के लिए कंपनी के कर्मचारियों को हिंदी सिखने के लिए प्रोत्साहित कर रही है ताकि कंपनी की लिखित सामग्री या विचारों का आदान प्रादान सहज सुलभ हो।

आज जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता को सहज सिध्द किया जा सकता है। साहित्य, शिक्षा, धर्म–दर्शन, वाणिज्य, विज्ञान, राजनीति, संचार माध्यम आदि क्षेत्रों से अनुवाद का गहरा संबंध है। भारत को ही नहीं बल्कि विश्व संस्कृति के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'विश्वकुटुम्बकम' के सपने को साकार करने के लिए अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज के युग में जनसंचार माध्यमों में हो रहे विकास के कारण हिंदी भाषा की प्रयुक्ति क्षेत्र विस्तृत हो गया है। गाँव से लेकर शहरों तक जो भी सूचनाएँ है वह अनुवाद के कारण एक ही समय में जनसंचार माध्यमों से जल्द पहँच रही है। अतः स्पष्ट है की अनुवाद और संचार माध्यमों को बिना मनुष्य जीवन की कल्पना संभव नहीं है।

संदर्भ संकेत :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, पृ. 301
2. प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, पृ. 212
3. Translation dmediastudies.blogspot
4. akhilbartiyapatrakarparishad.blogspot.com
5. https://www.sootbuzz.org

■■■